पैकिंग कारोबार भी महंगाई की चपेट में, 30 फीसदी की उछाल

सुशील मिश्र
मुंबई, 29 मार्च

पैकिंग कारोबार में कच्चे माल के रूप में इस्तेमाल होने वाला क्राफ्ट पेपर तथा दूसरी सामग्री की कीमतों में अभूतपूर्व बढ़ोतरी के चलते कॉर्यूगेटेड पैकिंग मटेरियल (गत्ते की पैकिंग) की कीमत भी 30 फीसदी तक बढ़ा दी गई है। [illegible] सीधा असर टेक्सटाइल, दवा, इंजीनियरिंग उत्पाद तथा रोजमर्रा की जरूरत वाले दूध और सब्जियों की कीमतों पर पड़ने वाला है। कॉर्यूगेटेड बॉक्स निर्माताओं ने कीमतों में बढ़ोतरी का ऐलान तो कर दिया बड़े ग्राहक बड़ी हुई कीमतें तुरंत देने को तैयार नहीं है जिसके चलते इस उद्योग से जुड़े छोटे कारोबारियों के ऊपर मुसीबत के बादल मंडराने लगे हैं।

पिछले दो महीनों में क्रॉफ्ट पेपर मिल मालिकों ने कीमतों में पांच बार बढ़ोतरी की है। इस तरह एक जनवरी से 18 मार्च तक क्राफ्ट पेपर की कीमतों में 30 फीसदी की बढ़ोतरी की जा चुकी है। इस 30 फीसदी बढ़ोतरी के बाद भी क्राफ्ट पेपर मिलों का कहना है कि वे अगले महीने अपनी कीमतों में थोड़ी और बढ़ोतरी कर सकते हैं क्योंकि पिछले दिनों चिली में आए भूकंप के बाद वहां पल्प मिलों के बंद होने की वजह से क्राफ्ट पेपर के उत्पादन में काम आने वाले फाइबर की दुनियाभर में कमी बनी हुई है। जिसके चलते कीमतों में उछाल देखने को मिल रही है।

इसके अलावा कॉरुगेटेड उद्योग में इस्तेमाल होने वाले स्टार्च की कीमतें एक साल के अंदर दोगुनी से भी ज्यादा हो गई हैं। तार और इस्पात की कीमतों में भी 40 फीसदी की बढ़ोतरी के साथ मजदूरी भी पिछले साल की अपेक्षा 10 फीसदी ज्यादा हो गई है। ऐसे में कॉरुगेटेड बॉक्स की कीमतों में बढ़ोत्तरी होना तो तय ही था। इंडियन कॉरुगेटेड केस मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन (आईसीसीएमए) के अध्यक्ष

पिछले दो महीनों में क्रॉफ्ट पेपर मिल मालिकों ने कीमतों में पांच बार बढ़ोतरी की है।

किरीत मोदी कहते हैं कि कच्चे माल के महंगा होने के कारण हमको भी अपनी कीमतों में 30 फीसदी की बढ़ोतरी का ऐलान करना पड़ा है, लेकिन कीमतों में इतनी ज्यादा बढ़ोत्तरी ग्राहकों के गले नहीं उतर रही है, नतीजतन कॉरुगेटेड बॉक्स उद्योग के लिए यह समय दोहरी मार वाला समय साबित हो रहा है। इस उद्योग से जुड़े छोटे कारोबारियों का कहना है कि हमको तो माल महंगा मिल रहा है लेकिन जब हम लोग महंगे दर पर माल बाजार में उतार रहे हैं तो एक साथ इतनी ज्यादा कीमत देने के लिए बड़े ग्राहक तैयार नहीं हो रहे हैं। वह लोग धीरे धीरे करके कीमतें बढ़ाने के लिए कह रहे हैं। बाजार में टीके रहने के लिए ग्राहकों को नाराज नहीं किया जा सकता है जिसके चलते इस समय यह कारोबार घाटे का सौदा साबित हो रहा है। फिर भी उम्मीद है कि अप्रैल से बढ़ी हुई कीमतें मिलने लगेगी, क्योंकि बड़े ग्राहकों को भी असलियत का पता है कि कोई भी कारोबारी ज्यादा दिनों तक घाटे का सौदा नहीं कर सकता है। आईसीसीएमए के सदस्यों की मानी जाए पिछले दो महीनों से लगातार घाटा होने के कारण कई छोटी यूनिटों में काम ठप पड़ गया है।

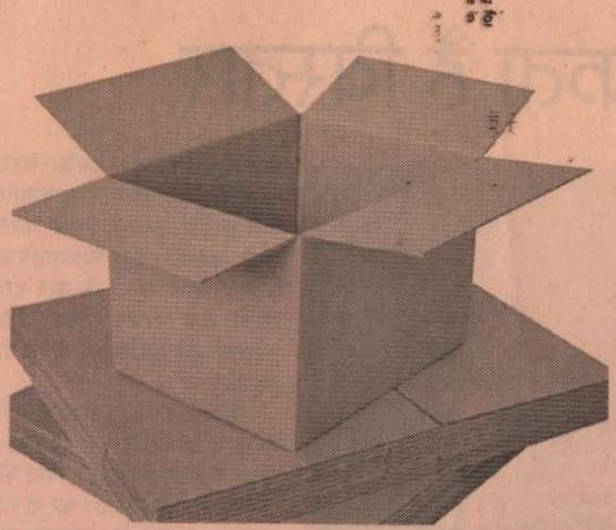

इन यूनिटों को चलाने वाले कारोबारियों का कहना है कि जब तक बाजार में स्थित साफ नहीं हो जाती है तब तक घाटे का सौदा करने से बेहतर है कि काम बंद कर दिया जाए। इस समय देश में गत्ते की पैकिंग का कारोबार सालाना 4 करोड़ रुपये का है जो करीब 12 फीसदी की दर से बढ़ रहा है। कॉर्यूगेटेड बॉक्स का सालाना उत्पादन लगभग 30 लाख टन का है। लेकिन इस समय यह उद्योग पेपर मिलों और बड़े ग्राहकों के बीच फंसा हुआ है।

आईसीसीएमए के अध्यक्ष किरीत मोदी कहते है कि दरअसल पेपर मिले जो कीमतों में वृद्धि करती है वह तत्काल प्रभाव से लागू हो जाता है जबकि कॉर्यूगेटेड बॉक्स सप्लायरों को ऐसा करने के लिए ग्राहकों से पूर्व मंजूरी लेनी पड़ती है जिसमें कम से कम 2 से चार सप्ताह का समय लग जाता है। उनका कहना है कि क्राफ्ट पेपर की कीमतों में बढ़ोतरी की बात तार्किक लगती है लेकिन जिस तरह से पेपर उद्योग एकाएक ऐसा करता है वह कॉर्यूगेटेड बॉक्स निर्माताओं के सामने मुश्किलें खड़ी कर देता है।